कानपुर के प्रमुख पर्यटन स्थलों का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्व

संजय श्रीवास्तव, शोध अध्येत्ता, इतिहास विभाग,
एम.एम.कॉलिज मोदीनगर,गाजियाबाद,उत्तर-प्रदेश।

प्रो०आशा यादव (विभागाध्यक्षा) इतिहास विभाग,
एम.एम.कॉलिज मोदीनगर, गाजियाबाद,उत्तर-प्रदेश।

संक्षेप:-

कानपुर, उत्तर प्रदेश का ऐतिहासिक और औद्योगिक नगर, विविध पर्यटन स्थलों के कारण एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र के रूप में उभर रहा है। यहां स्थित बिठूर, मोती झील, नाना राव पार्क, गंगा बैराज, कानपुर चिड़ियाघर, जे.के. मंदिर और जैन ग्लास मंदिर जैसे स्थल न केवल सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से समृद्ध हैं, बल्कि पर्यटकों को शांति और मनोरंजन भी प्रदान करते हैं। ये स्थल क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को सशक्त करने में सहायक हैं तथा स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न करते हैं। सरकार द्वारा चलाए जा रहे पर्यटन विकास योजनाओं और स्मार्ट सिटी परियोजनाओं ने इन स्थलों के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है। कानपुर का पर्यटन न केवल ऐतिहासिक चेतना को जाग्रत करता है बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक संरक्षण को भी प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार, पर्यटन की दृष्टि से कानपुर का महत्व बहुआयामी और विकासशील है।

की-वर्ड:- कानपुर, पर्यटन स्थल, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, विरासत, प्रतिबिंबित, जागरूकता, अनुभूतियाँ, मैनचेस्टर, सौंदर्यीकरण।

परिचय:- कानपुर, उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख औद्योगिक और ऐतिहासिक नगर, केवल व्यापार और शिक्षा का केंद्र ही नहीं, बल्कि अनेक दर्शनीय पर्यटन स्थलों का भी समृद्ध भंडार है। गंगा नदी के तट पर स्थित यह शहर अपने सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक आकर्षणों के कारण पर्यटकों के लिए एक विशेष आकर्षण बनता जा रहा है। कानपुर में स्थित जैसे – बिठूर (जहाँ से भारत की स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी फूटी), नाना राव पार्क, जैन ग्लास मंदिर, मोती झील, कानपुर चिड़ियाघर, गंगा बैराज, और जे.के. मंदिर जैसे स्थल, शहर की सांस्कृतिक विविधता और विरासत को प्रतिबिंबित करते हैं। ये स्थल न केवल आंतरिक पर्यटन को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि बाहरी पर्यटकों के लिए भी गहन ऐतिहासिक और धार्मिक अनुभव प्रस्तुत करते हैं। कानपुर के पर्यटन स्थलों की सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी बड़ी भूमिका है, क्योंकि यह स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करते हैं, जैसे होटल, गाइड सेवा, हस्तशिल्प विक्रय, परिवहन आदि। इसके अलावा, यह स्थल सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक जागरूकता और क्षेत्रीय गौरव को भी बढ़ावा देते हैं। राज्य सरकार द्वारा कानपुर को एक स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने की प्रक्रिया के तहत पर्यटन अवसंरचना को भी सशक्त किया जा रहा है, जिसमें डिजिटल सूचना केंद्र, ट्रैवल एप्स और प्रचार माध्यमों की भूमिका अहम है। बदलते समय

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

में जब पर्यटक अनुभवपरक यात्रा की ओर आकर्षित हो रहे हैं, कानपुर उन्हें ऐतिहासिक कहानियों, धार्मिक अनुभूतियों और प्राकृतिक सौंदर्य का सम्मिलित अनुभव प्रदान करता है। अतः पर्यटन की दृष्टि से कानपुर का महत्व न केवल शहरी विकास की दिशा में बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, स्थानीय रोजगार संवर्धन और सामाजिक एकता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस शोध का उद्देश्य इन स्थलों की भूमिका को गहराई से समझना, उनका विश्लेषण करना तथा कानपुर को एक उभरते पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करने की संभावनाओं का आकलन करना है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि:- कानपुर, जिसे कभी "पूर्व का मैनचेस्टर" कहा जाता था, ऐतिहासिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उत्तर भारत का एक महत्वपूर्ण शहर रहा है। यह नगर न केवल औद्योगिक क्रांति का साक्षी रहा है, बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी इसकी भूमिका उल्लेखनीय रही है, विशेषतः बिठूर और नाना राव पार्क जैसे स्थलों के माध्यम से। समय के साथ-साथ कानपुर में कई धार्मिक, प्राकृतिक और आधुनिक पर्यटन स्थल विकसित हुए हैं, जो पर्यटकों को विविध अनुभव प्रदान करते हैं। वर्तमान में पर्यटन न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास का प्रभावशाली साधन भी बन चुका है। ऐसे में यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि कानपुर के पर्यटन स्थलों का समग्र विश्लेषण किया जाए और यह जाना जाए कि ये स्थल स्थानीय अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक चेतना और क्षेत्रीय विकास में किस प्रकार योगदान दे रहे हैं।

शोध का औचित्य:- पर्यटन आज के युग में केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। कानपुर जैसे ऐतिहासिक और औद्योगिक नगर में अनेक ऐसे पर्यटन स्थल हैं, जिनका समुचित विकास और प्रचार क्षेत्रीय विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह शोध इसलिए आवश्यक है क्योंकि अभी भी कानपुर के कई पर्यटन स्थल अपेक्षित पहचान और सुविधाओं से वंचित हैं। शोध के माध्यम से इन स्थलों की वर्तमान स्थिति, उनके विकास की संभावनाएँ, तथा पर्यटकों और स्थानीय लोगों की अपेक्षाओं का विश्लेषण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन प्रशासनिक नीतियों, पर्यटन योजनाओं और स्थानीय भागीदारी को भी रेखांकित करेगा, जिससे एक सतत और उत्तरदायी पर्यटन प्रणाली का मार्ग प्रशस्त हो सके। अतः यह शोध कानपुर को एक प्रभावी और सशक्त पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

-: कानपुर के प्रमुख पर्यटन स्थल :-

श्री राधा कृष्ण मंदिर (जे. के. मंदिर):- यह मंदिर कानपुर के सबसे प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। इसका निर्माण 1960 ई० में जे.के. ट्रस्ट द्वारा कराया गया था। यह मंदिर अपनी वास्तुकला और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। प्राचीन और आधुनिक शैली से निर्मित यह मंदिर कानपुर आने वाले देसी विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना रहता है। यह मंदिर मूल रूप से राधा- कृष्ण को समर्पित है। इसके पास में ही लक्ष्मी-नारायण, अर्धनारीश्वर, नर्मदेश्वर और हनुमान का भी

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मंदिर है।[1] यह मंदिर एक शानदार उद्यान और झील के पास स्थित है। रात में मंदिर प्रकाश से नहा जाता है, जिससे झील के पानी में बना इसका प्रतिबिंब एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। इस मंदिर में प्रवेश नि:शुल्क है।

कानपुर का चिड़ियाघर (एलन फ़ॉरेस्ट जू):- 1971 ई० में स्थापित कानपुर का यह चिड़ियाघर भारत के सर्वोत्तम चिड़ियाघरों में क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का तीसरा बड़ा चिड़ियाघर है। इस चिड़ियाघर में अनेक प्रकार के वन्य जीवों का निवास है। यह पर्यटकों के लिए पर्यटन का एक प्रमुख आकर्षण का केंद्र है। यहां पर लगभग 1497 जीव-जंतु है और इसका क्षेत्रफल 76.56 हेक्टेयर में फैला है,जो ब्रिटिश इंडियन सिविल सर्विस के सदस्य सर एलेन की जमीन थी तथा इसका नाम भी उन्हीं के नाम पर रखा गया।[2] यह चिड़ियाघर आम लोगों के लिए 4 फरवरी 1974 को खोला गया। यहां का पहला जानवर ऊदबिलाव था, जो चंबल की घाटी से लाया गया था। इस चिड़ियाघर में बाघ ,शेर, तेंदुआ, भालू, लकड़बग्घा, गैंडा, लंगूर, वनमानुष, चिम्पेंजी, हिरन आदि जानवर है। यहाँ पर अति दुर्लभ प्रजाति का जानवर घड़ियाल भी पाया जाता है। इसके अलावा देशी - विदेशी पक्षियों को भी देखा जा सकता है। जिसमें अफ्रीका के शुतुरमुर्ग और न्यूजीलैंड का ऐमू तोता पक्षी भी हैं।

इस चिड़ियाघर में राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म की शूटिंग हुई जो 23 जून 1989 ई० को रिलीज हुई। जिसका नाम 'अनोखा अस्पताल' था। इस फिल्म में अभिनेत्री घायल जानवरों और पक्षियों के लिए अस्पताल चलती है और इसमें दर्शाये गये प्राकृतिक नजारे दर्शकों को काफी पसंद भी आए।[3] तत्कालीन मुख्यमन्त्री अखिलेश यादव जी के शासनकाल में टीम प्रोजेक्ट के तहत जून में टॉय ट्रेन चलाने के लिए काम शुरू हुआ। जू के डायरेक्टर के. थॉमस के अनुसार जून 2014 में यहां चार कोच वाली बैटरी ऑपरेटिड ट्रेन चलाई गयी।

मेमोरियल चर्च:- कानपुर मैमोरियल चर्च भारतीय इतिहास में औपनिवेशिक काल की वास्तुकला और कानपुर शहर की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिसे आमतौर पर 'ऑल सोल कैथेड्रल' के नाम से भी जानते हैं। यह कानपुर में स्थित एक प्रभावशाली वास्तुशिल्पीय संरचना है। इसका निर्माण 1857 ई० के विद्रोह में शहीद हुए ब्रिटिश सैनिकों की याद में 1875 ई० में करवाया गया था। यह चर्च 'लॉम्बरीक गोथिक' शैली में बना हुआ है।[4] चर्च के पूर्वी छोर पर एक स्मारक उद्यान है, जिसमें युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की याद में स्मारक बने हैं।

ब्रह्मावर्त घाट:- ब्रह्मगत घाट (कानपुर) गंगा नदी के तट पर स्थित है यह एक धार्मिक स्थल है। जो अपने ऐतिहासिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। हिंदू धर्म में इसे पवित्र स्थल इसलिए माना जाता है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना यही से शुरू की थी और इसीलिए इसी कारण इसे ब्रह्मवर्त घाट भी नाम दिया गया। पूर्णिमा, एकादशी और सूर्य ग्रहण जैसे शुभ अवसरों पर स्नान करने का विशेष महत्व है। मान्यता है कि यहां स्नान करने से पाप से मुक्ति तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है।[5] यहां प्रत्येक वर्ष धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन होते रहते हैं। जैसे- गंगा आरती, मेले और विभिन्न प्रकार के धार्मिक समारोह। गंगा आरती का दृश्य बहुत ही मनमोहक होता है। जिसमें सैकड़ो श्रद्धालु भाग लेते हैं।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

यह स्थान स्थानीय लोगों के लिए आस्था और संस्कृति का प्रतीक माना जाता है।[6] जो प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। सुबह-शाम का वातावरण बहुत ही शांत और आध्यात्मिक होता है। ब्रह्मवर्त घाट पर्यटकों के लिए आध्यात्मिकता का एक प्रमुख आकर्षण का स्थान है। यहां आकर लोग गंगा में स्नान करके मंदिरों में दर्शन के लिए जाते हैं। यहां कई प्राचीन मंदिर और धार्मिक स्थल है जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं । इसकी पवित्रता और सुंदरता को बनाए रखने के लिए सरकार एवं स्थानीय प्रशासन द्वारा विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही है। ब्रह्मावर्त घाट ने केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्रकृति दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण स्थल है। यह स्थल आस्था शांति और सौंदर्य का संगम है।[7]

फूल बाग (गणेश उद्यान):- यह फूल बाग कानपुर उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यह बाग कानपुर रेलवे स्टेशन, LIC बिल्डिंग और नाना राव पार्क के पास शहर के बीचों-बीच माल रोड पर बना है। कहा जाता है कि यह कानपुर के हृदय स्थल में स्थित है। इस बाग को गणेश विद्यार्थी उद्यान भी कहा जाता है। ब्रिटिश शासन काल में यह बाग क्वीन विक्टोरिया गार्डन के नाम से भी जाना जाता था। इसमें अनेकों ऐतिहासिक लोकसभायें हुई थी। जिनको संबोधित करने वालों में महात्मा गांधी, इंदिरा गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी और राम मनोहर लोहिया आदि प्रमुख नेता थे। इस बाग में कानपुर संग्रहालय नाम का एक सरकारी संग्रहालय भी है। जिसके कारण इसकी ऐतिहासिक विरासत अभी भी पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है।

गंगा बैराज:- इसका निर्माण 1995 ई०में शुरू होकर 2000 ई०में पूरा हुआ। इसकी लंबाई 1920 मीटर तथा इसमें 36 द्वार (गेट)है,लगभग इसमें 200 करोड़ की लागत आयीं थी। इसके ऊपर 6 लाइन की सड़क बनी हुई है।[8] यह एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल है। यहां पर्यटक सूर्यास्त के समय आकर गंगा का नजारा और नदी के किनारे की हवा का आनन्द लेते हैं। गंगा नदी की सुंदरता को और बढ़ाने के लिए नदी किनारे वॉक-वे, बोटिंग क्लब और पार्क बनाने की योजनाएं भी प्रस्तावित है।[9]

मोती झील:- यह एक सुंदर झील है जो अपने शांत वातावरण और मनोरम दृश्य के लिए जानी जाती है। मोती झील कानपुर शहर के मध्य स्थित एक ऐतिहासिक झील है। जिसे मोती की तरह चमकते हुए इसकी स्वच्छ जल राशि के कारण यह नाम मिला था। यह ब्रिटिश कालीन इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट नमूना है। 19 वीं सदीं के अंत में ब्रिटिश सरकार द्वारा कानपुर की बढ़ती जनसंख्या और सैन्य छावनी की जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए 1890 ई० के दशक में इसे विकसित किया गया। जिसमे प्रमुख इंजीनियर सर विलियम मूरसोम का प्रमुख योगदान था।[10] 20 वीं सदी तक मोती झील शहर की जल आपूर्ति का प्रमुख स्रोत थी।[11] स्वतंत्रता के बाद और अनियंत्रित शहरीकरण एवं औद्योगिककरण से 1990 ई० तक आते-आते झील का एक बड़ा हिस्सा सूख गया है। 2016 में राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT)ने इसके पुनरुद्धार के निर्देश दिए जिसके चलते उत्तर प्रदेश सरकार ने मोती झील पुनर्जीवन परियोजना शुरू की ।[12] ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्थल भारत के औद्योगिक और नगर नियोजन के इतिहास का प्रतीक है। इसको संरक्षित करके शहर को एक मुख्य पर्यटन स्थल के रूप में विकसित कर सकते हैं। जिससे वहां के लोगों को अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त हो सकते हैं ।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कमला रिट्रीट (विक्टोरिया पार्क):- कमला रिट्रीट कानपुर शहर के मध्य में स्थित है। इसका मुख्य नाम विक्टोरिया पार्क है। इसका निर्माण 1876 ई० में हुआ। जो कानपुर की प्रथम हरित झील और उद्यान परियोजना थी। इसका निर्माण अंग्रेजी अधिकारियों एवं यूरोपीय नागरिकों के आराम के लिए किया गया। 1857 ई० में कानपुर में अंग्रेजी वर्चस्व को दर्शाने के लिए इसका नाम ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के नाम पर रखा गया था। किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1950 ई० में इसका नाम बदलकर तत्कालीन प्रधानमंत्री (प०जवाहरलाल नेहरु) की पत्नी कमला नेहरू के नाम पर कमला रिट्रीट कर दिया गया। इस पार्क में फूलों की व्यवस्थित क्यारियां, फव्वारे, चौड़े-रास्ते हैं । पार्क के अंदर पुराने बंगले में एक संग्रहालय बना हुआ है। जिसमें स्वतंत्रता संग्राम तथा औपनिवेशिक काल के दस्तावेज तथा कानपुर के इतिहास से संबंधित कलाकृतियों को दर्शाया गया है।[13]

इस संग्रहालय में नाना साहिब,तात्या टोपे और ब्रिटिश सेनापति हैवलॉक से संबंधित अवशेष मौजूद है। पार्क के बीच में कमला नेहरू की एक बड़ी कांस्य से निर्मित प्रतिमा भी स्थापित है तथा 1857 ई० के युद्ध में प्रयोग की गई तोपें भी पार्क में दिखाई पड़ती हैं।[14] जो पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। कमला रिट्रीट कानपुर की ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। इसके संरक्षण और विकास से कानपुर के पर्यटन को एक नई दिशा मिल सकती है।

जैन ग्लास मंदिर:- जैन ग्लास मंदिर जिसे कांच का मंदिर भी कहा जाता है। यह मन्दिर कानपुर शहर के शिवाला क्षेत्र में कमला टावर के पास माहेश्वरी मोहल्ला में स्थित है । यह मंदिर जैन धर्म के सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ एवं 15 वे तीर्थंकर धर्मनाथ स्वामी को समर्पित है।[15] महावीर जयंती, पर्युषण पर्व और दिवाली के अवसर पर यहां विशेष पूजा और प्रकाश उत्सव आयोजित होते हैं।[16] यह मंदिर अपनी अनूठी वास्तुकला और कांच से बनी खूबसूरत नक्कासियों के लिए जाना जाता है, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता हैं। पर्यटक यहां आकर कांच की निकासियों और शांत वातावरण का आनंद लेते हैं। रात के समय में कांच की चमक और रोशनी का समायोजन मनमोहक वाला वातावरण बनाता है।

-:पर्यटन और क्षेत्रीय विकास का अंतर्संबंध:-

पर्यटन किसी भी क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण साधन होता है, और कानपुर जैसे ऐतिहासिक नगर में इसके माध्यम से क्षेत्रीय विकास की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं। **पर्यटन और स्थानीय व्यवसाय** का गहरा संबंध है; जब किसी क्षेत्र में पर्यटक आते हैं तो उनके आवास, भोजन, खरीदारी, परिवहन और मनोरंजन जैसी आवश्यकताएँ होती हैं, जिससे वहाँ के लघु उद्योग, हस्तशिल्प, स्थानीय बाज़ार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सेवा क्षेत्र को सीधा लाभ होता है। कानपुर के पर्यटन स्थलों जैसे गंगा बैराज, मोती झील, जे.के. मंदिर या बिठूर क्षेत्र में बढ़ते पर्यटक आगमन ने आसपास के व्यवसायों को सशक्त बनाया है, जिससे रोजगार के अवसर भी उत्पन्न हुए हैं। **कानपुर में होटलों, रेस्टोरेंट्स और गाइड्स की भूमिका** भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। छोटे-बड़े होटल, गेस्ट हाउस और लॉज पर्यटकों को ठहरने की सुविधा प्रदान करते हैं, जबकि विविधता से भरे रेस्टोरेंट्स स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय व्यंजन उपलब्ध कराते हैं, जो पर्यटन

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अनुभव को और समृद्ध बनाते हैं। साथ ही, पेशेवर पर्यटक गाइड, ट्रैवल एजेंसी और वाहन सेवा प्रदाता, पर्यटकों को शहर की संस्कृति, इतिहास और मार्गदर्शन के साथ यात्रा को व्यवस्थित व प्रभावी बनाते हैं। इससे न केवल आमदनी बढ़ती है, बल्कि पर्यटन को स्थायित्व और पेशेवर स्वरूप भी प्राप्त होता है। **प्रशासनिक एवं योजनागत पहल** के अंतर्गत उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग और नगर प्रशासन ने कानपुर को स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत विकसित करने की दिशा में कई प्रयास किए हैं, जिनमें ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण, सुविधाओं का उन्नयन, डिजिटल सूचना केंद्र, साफ-सफाई, सुरक्षा और प्रचार-प्रसार की रणनीतियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, वार्षिक उत्सवों, मेले और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से स्थानीय पर्यटन को सुदृढ़ किया जा रहा है। विशेष रूप से अटल घाट पर गंगा आरती, झीलों के किनारे लेज़र एक्टिविटी, और पार्कों में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम पर्यटकों को आकर्षित करने के सफल उदाहरण हैं। यह समन्वित प्रयास स्थानीय युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर खोलते हैं और शहरी ढांचे को भी बेहतर बनाते हैं। इस प्रकार, पर्यटन और क्षेत्रीय विकास के बीच गहरा अंतर्संबंध है, जो न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक सहभागिता और शहरी सौंदर्यीकरण को भी बढ़ावा देता है, जिससे कानपुर जैसे शहर को एक समृद्ध और जीवंत पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

-:पर्यटन नीति और सरकारी प्रयास:-

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अनेक रणनीतिक नीतियाँ और योजनाएँ लागू की गई हैं, जिनका उद्देश्य न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों को विकसित करना है, बल्कि नए पर्यटन स्थलों की पहचान कर उन्हें आर्थिक और सामाजिक विकास से जोड़ना भी है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लागू पर्यटन योजनाओं में 'प्रसाद योजना' (PRASAD Scheme) के अंतर्गत धार्मिक नगरों का विकास, 'हेरिटेज आर्क' जैसी योजनाओं के माध्यम से ऐतिहासिक स्थलों को जोड़ने की पहल और 'एक जिला एक उत्पाद' (ODOP) योजना के अंतर्गत पर्यटन को स्थानीय कारीगरी व परंपराओं से जोड़ने जैसे प्रयास उल्लेखनीय हैं। इन योजनाओं ने कानपुर जैसे शहर में छिपी पर्यटन संभावनाओं को राष्ट्रीय फलक पर लाने का मार्ग प्रशस्त किया है। स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत कानपुर को चयनित शहरों में शामिल किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप शहर में आधारभूत संरचना, डिजिटल सूचना केंद्र, पर्यटकों के लिए गाइडिंग सिस्टम, सीसीटीवी निगरानी, स्वच्छता, ट्रैफिक प्रबंधन और हरित क्षेत्रों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इन पहलों से पर्यटन अनुभव अधिक सुरक्षित, व्यवस्थित और आकर्षक हो गया है, जिससे न केवल स्थानीय बल्कि बाहरी पर्यटकों का भरोसा भी बढ़ा है। कानपुर में पर्यटन अवसंरचना को बढ़ावा देने वाली नीतियों के अंतर्गत ऐतिहासिक स्थलों का जीर्णोद्धार, घाटों का सौंदर्यीकरण, पार्कों व चिड़ियाघर की मरम्मत, पाथवे व लाइटिंग व्यवस्था और धार्मिक स्थलों पर सुविधाओं का विस्तार किया गया है। गंगा बैराज को 'अटल घाट' के रूप में विकसित कर वहाँ नियमित गंगा आरती, रोशनी की व्यवस्था और नाव विहार की सुविधा शुरू की गई है। इसके अलावा बिठूर क्षेत्र में बौद्ध, ब्रह्मावर्त, और पौराणिक स्थलों को एक सर्किट के रूप में विकसित किया जा रहा है। साथ ही, डिजिटल टूरिज्म एप्स, QR कोड-आधारित सूचना बोर्ड और ऑनलाइन टिकटिंग प्रणाली जैसे नवाचारों को अपनाया गया है ताकि पर्यटक बिना किसी भ्रम के स्थलों का अनुभव ले सकें। राज्य सरकार ने

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पर्यटन मित्र नामक एक योजना भी आरंभ की है जिसके अंतर्गत प्रशिक्षित स्थानीय गाइड्स को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। इन सभी सरकारी प्रयासों का संयुक्त प्रभाव यह है कि कानपुर की छवि केवल एक औद्योगिक नगर के रूप में नहीं, बल्कि एक आधुनिक, सुविधा-संपन्न और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध पर्यटन गंतव्य के रूप में उभर रही है, जिससे न केवल आर्थिक विकास को गति मिल रही है, बल्कि शहर की सांस्कृतिक पहचान भी पुनः स्थापित हो रही है।

साहित्य की समीक्षा:- भारत में पर्यटन क्षेत्र के विकास में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और बुनियादी ढांचे से संबंधित कारक भूमिका निभाते हैं। इन कारकों की प्राथमिकता और प्रभावशीलता को समझने के लिए Analytic Hierarchy Process (AHP) एक प्रभावशाली निर्णय-निर्माण विधि है। AHP पद्धति के माध्यम से विभिन्न प्रेरक कारकों जैसे परिवहन सुविधाएँ, सुरक्षा व्यवस्था, सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरणीय स्थिरता, सरकारी नीतियाँ, डिजिटल प्रचार, और स्थानीय सहभागिता का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है। शोध में पाया गया कि बेहतर बुनियादी ढांचा और सुरक्षा शीर्ष प्राथमिकताओं में हैं, जबकि डिजिटल तकनीक और प्रचार तेजी से उभरते कारक हैं। AHP द्वारा प्रदत्त वेटेज (weightage) नीति निर्धारकों को रणनीति तैयार करने में मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे संसाधनों का प्रभावी उपयोग हो सके। इस प्रकार, AHP विधि भारत में पर्यटन विकास की रणनीतियों को वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से निर्धारित करने में सहायक सिद्ध होती है।[17]

स्मार्ट सिटी वह होती है जहाँ तकनीक, पर्यावरणीय स्थिरता, बेहतर बुनियादी सुविधाएँ और नागरिक सहभागिता मिलकर एक उन्नत शहरी जीवनशैली का निर्माण करती हैं। भारत सरकार की स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत काकीनाडा और कानपुर जैसे शहरों को चयनित कर उनके पुनर्विकास की दिशा में कार्य किया गया। काकीनाडा में ई-गवर्नेंस, सोलर स्ट्रीट लाइट्स और जल प्रबंधन पर जोर दिया गया, जबकि कानपुर में ट्रैफिक नियंत्रण, गंगा तटों का सौंदर्यीकरण, स्मार्ट पार्किंग और पर्यटन स्थलों की डिजिटल पहुंच पर कार्य हुआ। ये प्रयास इसीलिए महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि ये शहरों को अधिक स्वच्छ, सुरक्षित, टिकाऊ और नागरिकों के अनुकूल बनाते हैं। स्मार्ट सिटी का "कैसे" तकनीकी नवाचार, जनभागीदारी, और नीति-समर्थन के सम्मिलन से स्पष्ट होता है। इन दोनों शहरों के अनुभव दर्शाते हैं कि स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार योजनाओं को ढालकर स्मार्ट समाधान लागू करना सफलता की कुंजी है।[18]

जॉन स्टेपिल्टन ग्रे पेम्बर्टन द्वारा उन्नीसवीं सदी में कानपुर और लखनऊ के भारतीय विद्रोह स्थलों का जो विवरण प्रस्तुत किया गया, वह केवल ऐतिहासिक घटनाओं का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि ब्रिटिश औपनिवेशिक "अंग्रेज़ीपन" को पुनः स्थापित करने का सांस्कृतिक प्रयास भी था। उनके विवरणों में इन स्थलों को एक प्रकार के स्मृति स्थल के रूप में चित्रित किया गया, जहाँ ब्रिटिश वीरता, शहादत और नैतिक श्रेष्ठता को प्रमुखता दी गई। कानपुर का नाना राव पार्क और लखनऊ का रेजीडेंसी परिसर जैसे स्थल अंग्रेजी स्मृति और पुनर्निर्माण की औपनिवेशिक परियोजना का हिस्सा बन गए। पेम्बर्टन के वर्णन न केवल स्थापत्य और घटनाओं पर केंद्रित थे, बल्कि उन्होंने स्थान की पहचान को पुनः परिभाषित करते हुए उसे ब्रिटिश सांस्कृतिक

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

दृष्टिकोण से अनुप्राणित किया। इस प्रकार, उनके लेखन ने विद्रोह स्थलों को राजनीतिक और भावनात्मक रूप से रूपांतरित कर, औपनिवेशिक वर्चस्व को वैधता प्रदान की।[19]

चिड़ियाघर प्रबंधन में आगंतुक संवर्धन (Visitor Enrichment) एक ऐसा अनिवार्य पहलू है, जो न केवल आगंतुकों के अनुभव को बेहतर बनाता है, बल्कि जीव संरक्षण, शिक्षा और संस्थागत प्रभावशीलता को भी मजबूत करता है। परंपरागत रूप से चिड़ियाघरों को केवल मनोरंजन स्थलों के रूप में देखा जाता रहा है, लेकिन वर्तमान समय में यह शिक्षा, अनुसंधान और संरक्षण का केंद्र बन चुके हैं। आगंतुक संवर्धन में विविध आयाम शामिल होते हैं जैसे—जानकारीपूर्ण साइनेज, इंटरएक्टिव डिस्प्ले, डिजिटल गाइड, प्राकृतिक वातावरण की अनुभूति, वर्कशॉप्स, बच्चों के लिए थीम आधारित कार्यक्रम, और जानवरों के व्यवहार संबंधी लाइव डेमोंस्ट्रेशन। ये सभी तत्व पर्यटकों को केवल दर्शक नहीं, बल्कि भागीदार के रूप में जोड़ते हैं। उदाहरणस्वरूप, कानपुर का एलेन फॉरेस्ट जू पर्यावरणीय शिक्षा और पारिवारिक मनोरंजन का संतुलन बनाकर आगंतुकों की रुचि को लंबे समय तक बनाए रखने में सफल रहा है। इस प्रकार, चिड़ियाघर प्रबंधन की सफलता अब इस बात पर निर्भर करती है कि वह आगंतुकों को केवल देखने का अवसर नहीं, बल्कि सीखने, समझने और प्रकृति से जुड़ने का समृद्ध अनुभव किस हद तक प्रदान करता है।[20]

-:कानपुर में पर्यटन का महत्व:-

ऐतिहासिक महत्व:- पर्यटन की दृष्टि से कानपुर का ऐतिहासिक महत्व बहुत महत्वपूर्ण है। यह भारतीय इतिहास में कई महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी रहा है। जिनका प्रभाव आज भी पर्यटन स्थलों के रूप में देखा जा सकता है । कानपुर का पर्यटन की दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व इसके समृद्ध इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम में योगदान और धार्मिक-सांस्कृतिक धरोहर के कारण उल्लेखनीय है। यह शहर न केवल औद्योगिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है, बल्कि इसके ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों को भारत के अतीत की झलक दिखाते हैं।

कानपुर की सबसे उल्लेखनीय और प्रभावशाली लड़ाई 1857 ई० की क्रांति थी, जिसने इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर कर दिया। बिठूर, सती चौरा घाट, और नाना राव पार्क जैसे स्थल आज भी इन घटनाओं की गवाही देते हैं। ये लड़ाइयाँ न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि इन्होंने कानपुर को एक क्रांतिकारी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शहर के रूप में पहचान दी।

सांस्कृतिक महत्व:- कानपुर का पर्यटन की दृष्टि से सांस्कृतिक महत्व इसके समृद्ध इतिहास, धार्मिक विविधता, स्थानीय परंपराओं, और कला-संस्कृति के अनूठे मिश्रण से उत्पन्न होता है। यह शहर न केवल औद्योगिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर पर्यटकों को भारतीय जीवनशैली और परंपराओं से जोड़ती है। कानपुर अपने सांस्कृतिक स्थलों के लिए जाना जाता है। ये स्थल शहर की सांस्कृतिक पहचान को उजागर करते हैं और पर्यटकों को

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भारतीय जीवनशैली से जोड़ते हैं। कानपुर के सांस्कृतिक स्थल शहर की धार्मिक, ऐतिहासिक और स्थानीय परंपराओं को दर्शाते हैं। इनमें बिठूर (पौराणिक और लोक संस्कृति), जैन ग्लास मंदिर (जैन कला), जे.के. मंदिर (हिंदू धार्मिकता), सती चौरा घाट (गंगा की परंपराएँ), फूल बाग (सामाजिक जागरूकता), कानपुर मेमोरियल चर्च (औपनिवेशिक संस्कृति), जाजमऊ (प्राचीन सभ्यता), गंगा बैराज (गंगा की श्रद्धा), नाना राव पार्क (स्वतंत्रता की गाथाएँ), और कानपुर चिड़ियाघर (प्रकृति और शिक्षा) शामिल हैं। ये स्थल विविधता, लोक परंपराओं, और कला-शिल्प के माध्यम से कानपुर की सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करते हैं, जो पर्यटकों को भारतीय संस्कृति से ही नही जोड़ते अपितु भारतीय संस्कृति की गहराई और उसकी विविधता से परिचित कराते हैं।

आर्थिक महत्व:- कानपुर, उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख औद्योगिक शहर, न केवल अपने चमड़ा और वस्त्र उद्योगों के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी इसका महत्व बढ़ता जा रहा है। यह शहर ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक आकर्षणों का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करता है, जो इसे पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाता है। पर्यटन के विकास से कानपुर की अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिल रही है और यह स्थानीय रोजगार, व्यापार और बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान दे रहा है। पर्यटन से कानपुर में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर बढ़े हैं। स्थानीय गाइड, ऑटो-रिक्शा चालक, टैक्सी ऑपरेटर, होटल कर्मचारी, और दुकानदार पर्यटकों की आवाजाही से लाभान्वित होते हैं। उदाहरण के लिए, बिठूर में नाविकों की आजीविका गंगा पर नौकायन करने वाले पर्यटकों पर निर्भर है। इसी तरह, मंदिरों और घाटों के आसपास फूल, प्रसाद और स्मारिका बेचने वाले छोटे व्यापारी भी पर्यटन से अपनी आय बढ़ाते हैं।

कानपुर का केंद्रीय रेलवे स्टेशन देश के व्यस्ततम स्टेशनों में से एक है, जो इसे दिल्ली, लखनऊ, और कोलकाता जैसे शहरों से जोड़ता है। पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण रेलवे और सड़क परिवहन में सुधार हुआ है। हाल ही में शुरू हुई इलेक्ट्रिक बस सेवाएँ, जो कानपुर से लखनऊ और अयोध्या के लिए प्रस्तावित मार्ग, पर्यटन को और सुगम बनाती हैं। इन परियोजनाओं से न केवल पर्यटकों को सुविधा होती है, बल्कि स्थानीय परिवहन उद्योग को भी आर्थिक लाभ मिलता है। इसके अलावा, चार्जिंग स्टेशन और सड़क सुधार जैसी परियोजनाएँ बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देती हैं। पर्यटन से कानपुर के स्थानीय बाजारों को भी प्रोत्साहन मिलता है। पर्यटक यहाँ के प्रसिद्ध "ठग्गू के लड्डू", चाट, और चमड़े के उत्पादों की खरीदारी करते हैं, जिससे खाद्य और हस्तशिल्प उद्योग फलते-फूलते हैं। शहर को "लेदर सिटी" के नाम से जाना जाता है, और पर्यटकों की रुचि के कारण चमड़े के सामानों की बिक्री बढ़ी है। इसके अतिरिक्त, होटल, रेस्तराँ, और गेस्ट हाउस जैसे आतिथ्य क्षेत्र में निवेश और रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

-:पर्यटन में जनसहभागिता की भूमिका:-

- **स्थानीय कारीगरों, कलाकारों और व्यवसायों की भूमिका:-**

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कानपुर के पर्यटन विकास में स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी एक प्रमुख कारक है, जो न केवल आर्थिक लाभ का माध्यम बनती है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता को भी सशक्त करती है। स्थानीय कारीगरों, शिल्पियों और कलाकारों की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो पर्यटकों के लिए हस्तनिर्मित वस्तुएं, कलाकृतियाँ, पारंपरिक परिधान, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी की नक्काशी और चमड़े के सामान जैसी वस्तुएं तैयार करते हैं। ये उत्पाद स्थानीयता और सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक होते हैं, जो पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनते हैं। इसके अलावा, छोटे व्यवसायी जैसे होटल, ढाबा संचालक, गाइड, टैक्सी चालक और स्ट्रीट वेंडर भी पर्यटकों की सेवा में संलग्न रहते हैं और उनकी आवश्यकताओं को स्थानीय संसाधनों से पूरा करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त आधार मिलता है।[21]

- **सांस्कृतिक कार्यक्रमों और उत्सवों में भागीदारी:-**

स्थानीय समुदाय की भागीदारी केवल व्यवसाय तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों और पारंपरिक उत्सवों में भी उनका सक्रिय योगदान होता है। जैसे बिठूर में आयोजित होने वाले धार्मिक मेलों, गंगा आरती, होली-महोत्सव, दीपावली झाँकियाँ, रामलीला, कवि सम्मेलन, लोकनृत्य एवं संगीत आयोजनों में स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुति से न केवल पर्यटकों को आकर्षक अनुभव प्राप्त होता है, बल्कि पारंपरिक सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रूप भी मिलता है। स्थानीय संस्थाएँ, स्कूल-कॉलेज, स्वयंसेवी संगठन और सांस्कृतिक मंच ऐसे आयोजनों को मिलकर आयोजित करते हैं, जिससे पर्यटन और सांस्कृतिक समरसता के बीच एक मजबूत सेतु बनता है। इन आयोजनों के माध्यम से स्थानीय युवाओं को मंच मिलता है, ग्रामीण प्रतिभाओं को पहचान मिलती है और पर्यटकों को क्षेत्रीय संस्कृति से आत्मीय जुड़ाव होता है।

- **पर्यटन के कारण सामाजिक जागरूकता में वृद्धि:-**

पर्यटन की बढ़ती गतिविधियाँ न केवल आर्थिक उन्नति लाती हैं, बल्कि सामाजिक चेतना और नागरिक जिम्मेदारी में भी उल्लेखनीय परिवर्तन लाती हैं। जैसे-जैसे स्थानीय लोग पर्यटकों से संपर्क में आते हैं, वे स्वच्छता, शिष्टाचार, सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक सम्मान जैसे मूल्यों को अधिक गंभीरता से अपनाने लगते हैं। पर्यटन स्थलों पर सफाई बनाए रखना, महिलाओं और बच्चों के प्रति संवेदनशीलता, और परंपराओं के प्रति सम्मान की भावना समाज में स्वतः विकसित होती है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरणीय पर्यटन (eco-tourism) की अवधारणा से जुड़ते हुए स्थानीय लोग जल, भूमि, वन्य जीवन और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी भागीदार बनने लगे हैं। इससे समुदाय में पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासत के प्रति स्वाभाविक सम्मान विकसित हो रहा है।

स्थानीय समुदाय की भागीदारी पर्यटन को केवल एक उद्योग नहीं, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन का स्वरूप देती है, जिसमें आर्थिक लाभ के साथ-साथ सांस्कृतिक संरक्षण, सामाजिक समरसता और पर्यावरणीय संतुलन का सामूहिक लक्ष्य सामने आता है। यह सहभागिता पर्यटन को अधिक सजीव, टिकाऊ और जिम्मेदार बनाती है तथा कानपुर को एक जनकेंद्रित पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होती है।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिणाम और चर्चा:-

Table 1: प्रमुख पर्यटन स्थलों की लोकप्रियता

क्रम संख्या	स्थल का नाम	पर्यटकों की पसंद (प्रतिशत)	पर्यटन का प्रकार
1	गंगा बैराज (अटल घाट)	28%	धार्मिक/प्राकृतिक
2	कानपुर चिड़ियाघर	20%	पारिवारिक/प्राकृतिक
3	जे.के. मंदिर	15%	धार्मिक
4	मोती झील	12%	शहरी/प्राकृतिक
5	नाना राव पार्क	8%	ऐतिहासिक/सांस्कृतिक
6	ISKCON मंदिर	6%	धार्मिक/आध्यात्मिक
7	जैन ग्लास मंदिर	5%	धार्मिक/कलात्मक
8	अटल स्मारक	4%	आधुनिक/राजनीतिक
9	मेमोरियल चर्च	2%	ऐतिहासिक/वास्तुशिल्प

इस तालिका में कानपुर के प्रमुख पर्यटन स्थलों की लोकप्रियता को दर्शाया गया है, जो पर्यटकों की प्राथमिकता और स्थल के प्रकार पर आधारित है। सर्वाधिक लोकप्रिय स्थल गंगा बैराज (अटल घाट) है, जिसे 28% पर्यटकों ने पसंद किया, क्योंकि यह धार्मिक आस्था और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम है। कानपुर चिड़ियाघर 20% पर्यटकों की पसंद बनकर पारिवारिक और बच्चों के लिए मुख्य आकर्षण सिद्ध हुआ है। जे.के. मंदिर धार्मिक पर्यटन का केंद्र है और 15% पर्यटकों द्वारा पसंद किया गया। मोती झील अपनी शहरी और प्राकृतिक संरचना के कारण 12% लोगों को आकर्षित करती है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से नाना राव पार्क को 8%, जबकि आध्यात्मिक अनुभव के लिए ISKCON मंदिर को 6% लोग पसंद करते हैं। शेष स्थल जैसे जैन ग्लास मंदिर, अटल स्मारक, और मेमोरियल चर्च विशिष्ट रुचि रखने वाले पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिनकी पसंद क्रमशः 5%, 4% और 2% रही।[22]

Table 2: पर्यटन से स्थानीय व्यवसायों को लाभ

व्यवसाय का प्रकार	औसत मासिक लाभ वृद्धि (%)	रोजगार की स्थिति

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

होटल/गेस्ट हाउस	15%	अच्छा
रेस्टोरेंट/ढाबा	12%	अच्छा
गाइड सेवा	18%	मध्यम
स्थानीय हस्तशिल्प	10%	सीमित
ट्रैवल/टैक्सी सेवा	20%	अच्छा

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि कानपुर के पर्यटन स्थलों के विकास का स्थानीय व्यवसायों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ट्रैवल और टैक्सी सेवाओं में सबसे अधिक 20% मासिक लाभ वृद्धि दर्ज की गई है, जो दर्शाता है कि पर्यटकों की आवागमन संबंधी आवश्यकताएँ इस क्षेत्र में रोजगार और आय के नए अवसर उत्पन्न कर रही हैं। इसके बाद गाइड सेवाओं में 18% लाभ वृद्धि देखी गई, हालाँकि रोजगार की स्थिति अभी भी "मध्यम" है, जो प्रशिक्षित गाइडों की संख्या और प्रबंधन तंत्र पर निर्भर करती है। होटल/गेस्ट हाउस और रेस्टोरेंट/ढाबों को क्रमशः 15% और 12% की वृद्धि मिली है, जिससे इन क्षेत्रों में "अच्छा" रोजगार उपलब्ध हो रहा है। वहीं, स्थानीय हस्तशिल्प में लाभ वृद्धि केवल 10% है और रोजगार की स्थिति "सीमित" बनी हुई है, जो प्रचार की कमी और बाजार की अनिश्चितता को दर्शाता है।[23]

निष्कर्ष:- कानपुर, जिसे अक्सर "भारत की औद्योगिक नगरी" के रूप में जाना जाता है, पर्यटन की दृष्टि से एक समृद्ध शहर है। यहाँ का ऐतिहासिक महत्व 1857 ई की क्रांति, औपनिवेशिक विरासत, और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े प्रतीकों में झलकता है। धार्मिक आस्था के प्रतीक जे.के. मंदिर, ब्रह्मावर्त घाट, और जैन ग्लास मंदिर जैसे स्थल श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य में एलेन फॉरेस्ट जू, मोती झील, और गंगा बैराज जैसे स्थल शहर की हरियाली और शांति को प्रदर्शित करते हैं। सांस्कृतिक विरासत फूल बाग, कमला रिट्रीट, और संग्रहालयों के माध्यम से जीवंत होती है। पर्यटन के आर्थिक महत्व को देखें तो पर्यटन से होटल, रेस्टोरेंट, टैक्सी सेवा, गाइडिंग और हस्तशिल्प जैसे अनेक व्यवसायों को प्रत्यक्ष लाभ मिल रहा है, जिससे क्षेत्र में रोजगार और आमदनी में वृद्धि हो रही है। यह स्थानीय रोजगार, हस्तशिल्प उद्योग, और बुनियादी ढाँचे के विकास को बढ़ावा देता है। चमड़े के उत्पादों से लेकर ठग्गू के लड्डू तक, स्थानीय व्यवसाय पर्यटकों पर निर्भर हैं। शोध के दौरान यह भी सामने आया कि पर्यटक स्वच्छता, मार्गदर्शन और सुरक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं से संतुष्ट हैं, हालाँकि कुछ क्षेत्रों में और सुधार की आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रचार, स्थानीय हस्तशिल्प के बाजार विस्तार, और प्रशिक्षित गाइडों की उपलब्धता के संदर्भ में हालाँकि, कानपुर के पर्यटन की पूरी क्षमता को उजागर करने के लिए ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण, स्वच्छता अभियान, और बेहतर प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कानपुर में पर्यटन की दृष्टि से प्रबल संभावनाएँ मौजूद हैं, जिन्हें योजनाबद्ध ढंग से आगे बढ़ाकर शहर को एक समृद्ध, सतत और उत्तरदायी पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है। इसके लिए प्रशासन, स्थानीय समुदाय और निजी क्षेत्र के

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि पर्यटन न केवल आर्थिक लाभ का साधन बने, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक समरसता और पर्यावरणीय संतुलन का भी संवाहक बन सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. श्री राधाकृष्ण मन्दिर,कानपुर नेटिव प्लेनेट ,7 मई ,2015.
2. नवभारत टाइम्स अख़बार, पेज न० -13, 24/8/2013.
3. अनोखा हॉस्पिटल, निर्देशन-मुकेश शर्मा, अभिनेता-अमरजीत पटेल, शम्मी विजय बनर्जी-1989.
4. Italian Gothic architecture: By -Max Dvorak, Page -39.
5. मनुस्मृति (अध्याय-2,श्लोक 17-19)
6. कानपुर: इतिहास और संस्कृति- डॉ० रामनारायण यादव
7. गंगा द सिटी का टेक्सटाइल एंड ट्रेडीशन, उत्तर प्रदेश: पर्यटन विभाग, लखनऊ- अजय कुमार सिंह
8. उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग- गंगा बैराज प्रोजेक्ट-रिपोर्ट, 2001
9. The Times of India: Kanpur's Ganga Barrage: A lifeline under threat (2019)
10. कानपुर: ए हिस्टॉरिकल एंड सोशल प्रोफाइल-लक्ष्मीकांत त्रिपाठी पेज न०-20,21 (1957)
11. Colonial Infrastructure and Urban Development in India: प्रो. सुनील कुमार
12. उत्तर प्रदेश जल आपूर्ति विभाग की रिपोर्ट 7 अगस्त, 2019, पृष्ठ 23-41
13. Kanpur: A Historical and social profile. राधेश्याम शुक्ला (2015)
14. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)कानपुर शाखा की रिपोर्ट,(2019)
15. जैन मंदिरों की कला एवं संस्कृति: डॉ. प्रमोद जैन, प्रकाशन-जैन विद्या संस्थान,(2008).
16. स्थानीय साक्षात्कार दोपहर 12:20, 5 अक्टूबर 2024 मंदिर ट्रस्टी श्री रमेश जैन, आयु 65 वर्ष|
17. कुमार, आर., कंसारा, एस., बंगवाल, डी., दामोदरन, ए., और झा, ए. (2022)। भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रेरक कारक: ए.एच.पी विधियों का उपयोग। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लॉजिस्टिक्स सिस्टम्स एंड मैनेजमेंट, 42(3), 407-426.
18. गुप्ता, के., और हॉल, आर. पी. (2020). स्मार्ट सिटी बनने के क्या, क्यों और कैसे को समझना: काकीनाडा और कानपुर के अनुभव. स्मार्ट सिटीज़, 3(2), 232-247.
19. बीट्टी, एम. (2022). "अंग्रेज़ीपन" और स्थान का पुनर्निर्माण: जॉन स्टेपिल्टन ग्रे पेम्बर्टन के कानपुर और लखनऊ में भारतीय विद्रोह स्थलों के उन्नीसवीं सदी के विवरण. ब्रिटेन और विश्व, 15(1), 24-46.
20. सिंह, ए., सिंह, आर. के., और बजाज, ए. (2016)। आगंतुक संवर्धन-चिड़ियाघर प्रबंधन में एक अनिवार्य परिप्रेक्ष्य। ज़ूज़ प्रिंट, 31(11), 19-21।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

21. अग्रवाल, एस. (2015)। पर्यटन उद्योग के विशेष संदर्भ में भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की भूमिका। वॉयस ऑफ रिसर्च, 3(4), 59-60।

22. कानपुर पर्यटन,सूचना विभाग ,उत्तर प्रदेश |

23. वहीं |

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:5 in May-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/